इमाम मूसा काज़िम (अ0)

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्येदुल उलमा सैय्यिद अली नक़ी ताबा सराह

विलादत:– 7 सफ़र 128 हिजरी
शहादत:– 25 रजब 182 हिजरी

आपके ज़माने में सियासत का शिकंजा फिर सख़्त हो गया। अब न तालीम की वह आज़ादी रही न तबलीग़ और इशाअत के मौक़े बाक़ी रह गये हुकूमत बराबर आपके ख़िलाफ रही यहाँ तक कि आख़िर उम्र के कई साल पूरे के पूरे क़ैदख़ाने में गुज़र गये मगर आपकी बुलन्द सीरत की रौशनी इतनी तेज़ थी कि क़ैदख़ाने की ऊँची और संगीन दीवारें उसके लिए एक नाज़ुक और हल्के पर्दे से ज़्यादा न थीं जिसके अन्दर से उसकी किरनें छन–छन कर बाहर निकलती रहीं। यहाँ तक कि चौदह सदियाँ पार करके हम तक भी पहुँच सकी हैं। चुनानचे इसी सीरत की बुलन्दी का नतीजा यह था कि उस वक़्त की हुकूमत के तय किए हुए क़ैदखानों के अफसर आपकी नेकी के सामने हथियार डाल देते थे और आपके साथ सख़्ती करने से माज़ूर रहते थे जिसके नतीजे में बार–बार निगरानों के बदलने की ज़रूरत होती थी। चुनानचे पहले आपको बसरा में ईसा बिन जाफ़र बिन मन्सूर की निगरानी में रखा गया इस हिदायत के साथ कि इनको अकेले क़ैद रखो और कुछ दिन के बाद हुक्म दिया कि इन्हें क़त्ल कर दो। वह उस वक़्त के ख़लीफा का चचाज़ाद भाई था मगर उसके दिल पर इमाम मूसा काज़िम (अ0) के अच्छे किरदार का असर पड़ गया था। उसने लिखा कि मैंने उनके हालात की ख़ूब जाँच की है वह तो हमेशा दिन को रोज़ा रखते हैं और दिन रात इबादत में लगे रहते हैं अकेले में भी हम में से किसी के लिए बद्दुआ नहीं करते बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि तूने मुझे अपनी इबादत के लिये यह अकेलेपन की जगह दी। ऐसे ख़ुदा के मानने वाले और इबादत करने वाले की जान लेना मेरे बस की बात नहीं है।

जब उसने इन्कार किया तो आपको बसरा से बुलवाकर बग़दाद में फज़ल बिन रबी के हवाले किया गया। मगर फज़ल पर भी आपके किरदार का बहुत असर पड़ा। आख़िर फज़ल बिन रबी को भी इस सूरत से हटाया गया। यह्या बरमकी को सीधे तौर पर निगराँ बना दिया गया और फिर उससे भी मुतमइन न होकर सनदी बिन शाहिक को तैयार किया गया। यह ऐसा संगदिल और लड़ाकू था कि इसने धोके से ज़हर देकर इमाम(अ0) की ज़िन्दगी का ख़ात्मा किया।

ज़िन्दगी में क़ैदख़ाने में क़ैद रखे गये और फिर क़ब्र के अन्दर दफ़न हो गये बल्कि उनके ज़बान और क़लम से निकले हुए बहुत से इरशादात और तालीमें और नबी की शरीअत के अहकाम अब तक किताबों के सफहात पर मौजूद हैं जो बता रहे हैं कि वह उसी सिलसिले की एक कड़ी थे जिसमें से हर एक अपने ज़माने के हालात के हिसाब से इन्सानी क़ाफले को उसकी मुकम्मल इन्सानी मन्ज़िल तक पहुँचाने के लिए रास्ता दिखाने का फर्ज़ अन्जाम देता रहा। और अपने किरदार की बड़ाई से ''मेराजे इन्सानियत'' की राह दिखाता रहा। □□□